विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कांग्रेस में वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण शोध पत्र प्रस्तुत किये

पंतनगर। 11 नवम्बर, 2009। चौथे उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कांग्रेस के दूसरे दिन कृषि महाविद्यालय के सभागार में कृषि विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में किये गये महत्वपूर्ण शोध–पत्र वैज्ञानिकों द्वारा तीन श्रेणियों में प्रस्तुत किये गये। शोध प्रस्तुतिकरण के दौरान डा. आर.के. ढींगरा ने 'रेशम कीट पालन की तकनीकी और उसके प्रभाव' विषय पर, पादप प्रजनन विभाग के वैज्ञानिक डा. जे.पी. जायसवाल ने 'हीट स्ट्रेस टू ह्वीट प्रोडक्टिविटी' विषय पर शोध प्रस्तुत करते हुए देश के उत्तर पश्चिमी और उत्तर पूर्वी क्षेत्रों को अतिसंवेदनशील बताया। विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के डा. वी. शर्मा ने हरी मिर्च एवं टमाटर में लगने वाले विल्ट के नियंत्रण हेतु विकसित जैव नियंत्रण तकनीकी पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। पर्यावरण विज्ञान विभाग, मानविकी महाविद्यालय के डा. वीर सिंह ने 'पर्वतीय क्षेत्रों में जैव विविधता, किसान और कृषि' विषय पर कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम, चमोली के डा. वी.पी. सिंह ने 'उत्तराखण्ड के मध्य पर्वतीय क्षेत्र में रंगीन पालीथीन पलवार का ग्रीष्म कालीन चप्पन कद्दू की वृद्धि एवं उपज पर प्रभाव' विषय पर अति महत्वपूर्ण शोध परिणामों को प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस तकनीक से इस पर्वतीय क्षेत्र में बेमौसमी सब्जियों का अधिक उत्पादन किया जा सकता है जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति बेहतर हो सकती है। केन्द्रीय रेशम कीट पालन अनुसंधान केन्द्र के डा. पी.के. सिंह ने 'शहतूत वृक्षारोपण का मृदा पर प्रभाव' विषय पर महत्वपूर्ण शोध निष्कर्षों को प्रस्तुत किया।

गृहविज्ञान महाविद्यालय में तीन श्रेणियों में टेक्सटाइल, पोषण एवं बाल विकास पर मौखिक प्रस्तुतिकरण में 12 वैज्ञानिकों ने पत्र प्रस्तुत किये। नैनो टेक्नोलॉजी का टेक्सटाइल में उपयोग, महिला सशक्तिकरण एवं डेयरी प्रबन्धन, दरियों की बुनायी, शैक्षिक वातावरण को प्रभावित करने वाले कारकों जो कि प्राइमरी शिक्षा से सम्बन्धित था विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे। गढ़वाल विश्वविद्यालय की डा. अनिता सती ने सर्व शिक्षा अभियान विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए विशेष रूप से ऐसे कारकों का उल्लेख किया जो बच्चों की सीखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। उनका यह शोध कक्षा 1 एवं 4 चार के प्राइमरी विद्यार्थियों पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता हैदराबाद स्थित कृषि विश्वविद्यालय की डा. ए. शारदा देवी जो कि गृहविज्ञान महाविद्यालय में अधिष्ठाता एवं परिधान एवं टेक्सटाइल विभाग की प्राध्यापक हैं ने किया।

ई.मेल. चित्र सं.–1. तकनीकी सत्र में शोध पत्रों पर विचार–विमर्श करते हुए वैज्ञानिक